130 प्रकार के घरेलू नुस्खों का पारंपरिक उपयोग होता हैं कान के रोगों मे

* तेजी से विलुप्त होता पारंपरिक ज्ञान

* 50 वनौषधियों का प्रयोग जटिल अवस्था मे

छत्तीसगढ़ मे कान संबंधी रोगों की चिकित्सा मे 50 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग होता है। इनमे से अधिक्तर वनौषधियों का प्रयोग बाहरी रुप से होता है। पारंपरिक चिकित्सकों के साथ आम निवासियों को भी विभिन्न औषधीयों के उपयोग की जानकारी है। राज्य मे वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने यह जानकारी दी है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे पिछले दस वर्षों से किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि कान के रोगों की आरंभिक अवस्था में घरेलू औषधियों का प्रयोग किया जाता है। अब तक 130 से भी अधिक घरेलू नुस्खों के विषय में जानकारी एकत्र की जा चुकी है। घरेलू नुस्खों के नाकाम होने पर रोगी पारंपरिक चिकित्सकों से चिकित्सा करवाते है। ग्रामीण और वनीय क्षेत्रों मे अपनी सेवाएं दे रहे पारंपरिक चिकित्सक आस पास उगने वाली वनस्पतियों की सहायता से इन रोगों की चिकित्सा करते है। औषधीय खरपतवार फुडहर के सभी पौध भागों का प्रयोग कान के रोगों के लिये किया जाता है। कान दर्द मे फुडहर की गर्म पत्तियों का रस प्रभावित कान मे टपकाया जाता है। यह उपयोग पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। छत्तीसगढ़ में मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक आम की बौर को एकत्र कर उन्हे आधार तेल मे उबालकर औषधीय तेल का निर्माण करते है। ये औषधीय तेल कान दर्द मे उपयोगी है। बौर के मौसम के दौरान बनाये गये इस तेल को पारंपरिक चिकित्सक वर्ष भर उपयोग करते है। आम की देशी प्रजातियों के बौर ही उपयोग किये जाते है। कई पारंपरिक चिकित्सक इन वृक्षों को डेढ़ -दो माह पहले से विशेष सत्वों से सींचते है ताकि बौर औषधीय गुणों से परिपूर्ण हो जायें। कांकेर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक कोरिया नामक वनौषधि की छाल के सूखे चूर्ण का प्रयोग कान बहने पर करते है। चूर्ण को रोगी के कान मे डाला जाता है। कोरिया के पौधे प्राकृतिक रुप से वनों मे उगते हैं। धमतरी क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच मेंहदी की पत्तियों का उपयोग लोकप्रिय है। इन पत्तियों का प्रयोग बाहरी तौर पर होता है। राजनांदगांव क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक बम्बरी (बबूल) की छाल से तैयार काढ़े का प्रयोग कान बहने पर करते है। बम्बरी के पुराने वृक्षों को छाल एकत्रण के लिये चुना जाता है। बिलासपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक मुनगा (सहजन) के फूलों से कान के रोगों की चिकित्सा करते है। छाँव मे सुखाये गये फूलों को चूर्ण के रुप मे कान मे डाला जाता है।

समुचित दस्तावेजीकरण न होने कारण कान के रोगों मे घरेलू नस्खों और वनौषधियों से संबंधित बहुत सा पारंपरिक ज्ञान विलुप्त हो चुका है। हमारे बीच मौजूद वरिष्ठ निवासी इस बात का प्रमाण देते है कि पहले घरेलू नुस्खे हजारों की संख्या मे थे। दस्तावेजीकरण के वर्तमान प्रयास इस अनूठे पारंपरिक ज्ञान को भविष्य के लिये सुरक्षित रख पायेगें - ऐसा पंकज अवधिया का मानना है।